पाठ - 1
इस्लाम क्या है ?

الدرس الأول - هندي
ما هو الإسلام ؟

भूमिका : यदि इन्सान इस धरती पर सोच विचार करेगा जिस पर वह सांस लेता है और इस महान व विशाल संसार पर नज़र डालेगा, आसमान और उसमें मौजूद अनगिनत सितारे जो एक बड़े महान व्यवस्था के तहत सफर कर रहै हैं, ज़मीन और उसपर मौजूद पहाड़ों, नहरों, पेड़ों, खेतों, हवाओं, पानी, खुष्की, तरी, रात और दिन का आना, इन सब पर सोच विचार करेगा तो खुद से सवाल करेगा कि इन तमाम चीज़ों को किस ने पैदा किया है? आसमान से पानी किसने बरसाया जिसके बिना मानव जीवन बाकी नहीं रह सकता,और उसमे पौधे, बाग, फूल और फल उगाए इन्सानों व जानवरों की ज़रूरत पूरी की और ज़मीन को इन चीज़ों की हिफ़ाजत के लिए तैयार किया
वह कौन हस्ती है जिसने इन्सान को अनोखे अन्दाज़ में पैदा किया है और उसे बहुत ही बेहतर शक्ल व रूप प्रदान किया है? यदि इन्सान अपनी ज़ात पर और अपने वजूद पर सोच विचार करेगा तो अल्लाह की अनोखी मख़लूक़ और पक्की बनावट पर हैरत करेगा, आप अपने जिस्म के अलग अलग अंगों पर सोच विचार करें जो एक उचित अन्दाज़ में काम करते हैं आप उनमें से बहुत कम अंगों के कामों को जानते हैं न कि आप उसमें पूरी जानकारी रखते हों।
जिस हवा में आप सांस लेते हैं, उसी को देख लें कि यदि एक मिनट के लिए रुक जाए तो जीवन चक्र ठहर जाए। आप सोचें कि इसे किसने बनाया है? जिस पानी को आप पीते हैं, जो खाना आप खाते हैं, जमीन जिस पर आप चलते हैं, आसमान और उसमें मौजूद चीज़ें, सूरज जो रोशनी देता है और चांद सितारे, और जिन चीजों को आप अपनी आखों से देखते हैं सोच विचार करें कि इनको किसने पैदा किया है? वह अल्लाह की ज़ात है जिसने इस पूरे ब्रहमाण्ड को बनाया है, वही अकेला इस संसार को चलाता है, वही आपका दाता है जिसने आप को पैदा किया है, आपको रोज़ी देता है, आपको मारता और जिलाता है, उसी ने आपको अदम और हमारे पैदा किए जाने का मक्सद क्या है?

पैदा किए जाने का मक़्सद : अल्लाह ने हमें पैदा किया है ताकि हम केवल और केवल उसी की इबादत करें। उसने अपनी इबादत का तरीक़ा बताने के लिए हमारी तरफ़ बहुत से रसूलों (दूतों) को भेजा, और अनेक किताबें उतारी हैं अतः जो अल्लाह की इबादत करेगा और उसके आदेशों को मानेगा और उसके बताए हुए बुरे कामों से बचेगा वह अपने दाता की खुशनूदी को हासिल कर लेगा, परन्तु जो आदमी अल्लाह की इबादत से मुंह मोड़ेगा उसके बताए हुए अच्छे कामों व बुरे कामों से इन्कार करेगा, वह अल्लाह के प्रकोप और उसकी सज़ा का हक़दार ठहराया जाएगा, अल्लाह ने इस संसारिक जीवन को अमल का घर और इम्तिहान गाह बनाया है।
फ़िर क़यामत के दिन अल्लाह सारे इन्सानों को हिसाब व किताब के लिए दोबारा जिन्दा करेगा, जहां अल्लाह ने ऐसी जन्नत बना रखी है, जिसकी नेमतों को न तो किसी आंख ने देखा है, न किसी कान ने सुना है और न ही किसी इन्सान के दिल में उन नेमतों का विचार आया है, अल्लाह ने जन्नत को अपने उन मोमिन बन्दों के लिए तैयार किया है जो उस पर ईमान लाए होंगे और उसके आदेशों का पालन किये होंगे।
अल्लाह ने जहन्नम में अलग अलग तरह के अज़ाब तैयार किए हैं जिनके बारे में किसी इन्सान के दिल में विचार भी नहीं आया होगा अल्लाह ने जहन्नम को उन लोगों के लिए तैयार किया है जिन्हों ने इस्लाम को छोड़ कर किसी दूसरे धर्म को अपनाया होगा।

इस्लाम क्या है? इस्लाम वह दीन है जिसे अल्लाह ने पसन्द किया है जो केवल एक अल्लाह की इबादत और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन व हुक्म मानने को कहता है। अल्लाह किसी भी व्यक्ति से इस्लाम के अलावा कोई दूसरा दीन नहीं कुबूल करेगा, यह कुछ लोगों के लिए ख़ास नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है, अल्लाह ने अपने बन्दों को कुछ कामों के करने का हुक्म दिया है। अतः जो इन्सान अल्लाह का कहा मानेगा वह सफल होगा और जो उसका कहा नहीं मानेगा वह नाकाम व ना मुराद होगा। इस्लाम कोई नया दीन नहीं है, बल्कि अल्लाह ने इस धरती पर इन्सान के वजूद ही से इस दीन को अपने बन्दों के लिए पसन्द किया है, और तमाम रसूलों दूतों ने इसी दीन की तरफ दावत दी है।